॥ पूजा मण्डप की रचना ॥

ईशान पूर्व East. अग्नि SE

N.E.

North.

कलश	गौरी गणेश	सत्य नारायण	अन्य देवी देव मूर्तियां
नवग्रह मण्डल			षोडश मातृका
			दीपक

वायुव्य पश्चिम नैऋत्य

N.W. West. S.W.

यजमान यहां बैठे अन्य पूजन सामान

श्री सत्य नारायण पूजा प्रकरण।

निश्चित दिन में घर की पूर्व या उत्तर दिशा में ***श्री सत्य नारायण पूजा*** हेतु सुन्दर मण्डप निर्माण करना चाहिए। मण्डप निर्माण विधि इस प्रकार है - सर्व प्रथम, लगभग एक मीटर लम्बी तथा एक मीटर चौड़ी चौकी का प्रबन्ध करें। उसकी ऊँचाई ३०० सेन्टिमीटर के लगभग हो। उसके चारो कोनों में केले के पत्ते बांध कर एक लघु मण्डप निर्माण किया जा सकता है। चौकी पर सुन्दर पीला या श्वेत वर्ण का वस्त्र बिछा हो। मण्डप की नैऋत्य (S.W) कोनें में जलपात्र, शंख, घंटा, धूपदानी और तेल का दीपक रखें। मण्डप के अग्नि कोण (S.E) में घृत दीपक तथा अर्ध्य रखें। मण्डप के वायुव्य (N.W) कोनें में कुंकुम, चन्दन, हल्दी, अक्षत, पुष्प रखें एवं अन्य पूजनोपयोगी वस्तु भी निकट ही रखें। घट स्थापन विधि से मण्डप के ईशान कोण (N.E) में (ऊपर दिये चित्र में देखें) कलश स्थापित करें तथा पूर्व दिशा में पूर्ण पात्र के ऊपर भगवान सत्यनारायण की स्वर्ण मयी प्रतिमा प्राण प्रतिष्ठा पूर्वक क्रम के अनुसार स्थापित करनी चाहिए। नवग्रह मण्डल उत्तर तथा षोडश मातृका पूजन दक्षिण दिशा में किया जाता है। पुरोहित तथा यजमान यथायोग्य दक्षिण और पश्चिम में बैठें। पूजन प्रारम्भ करने से पहले शुद्ध धुले हुवे वस्त्र पहन कर अन्य सभी प्रकार के कार्यों से निवृत हो मन तथा शरीर से परमात्मा के सान्निध्य में पूरी निष्ठा तथा भाव से बैठें। बैठने के लिए कुशासन, कम्बलासन, व्याघ्रचर्म या मृगचर्म का उपयोग किया जाता है। यदि पूजन हवनात्मक हो तो पूजा आरम्भ करने से पूर्व ही वेदी के निकट ही हवन कुण्ड की स्थापना तथा हवनोपयोगी सामग्री को एकत्रित कर लेना चाहिए। मण्डप की साज सज्जा भी पूजन प्रारम्भ होने से पूर्व ही कर लेनी चाहिये।

षट्कर्म।

क्रिया शरीर को परमात्मा से जोड़ती है तथा मन्त्र मन को परमात्मा से जोड़ते हैं। परमात्मा नित्य शुद्ध बुद्ध है अतः सर्व प्रथम निम्न मन्त्र से शरीर पर तथा पूजा सामग्री पर जल के छींटे देते हुवे मन्त्र बोलें॥

॥ पृथ्वी पूजन ॥

पृथ्वी का स्पर्श कर इस मन्त्र को बोलें तथा पृथ्वी पूजन करें।

पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।त्वं च धारय मां देवी पवित्रं कुरू चासनम्॥

॥ भूतोत्सादन मन्त्र ॥

ॐ अपसर्पन्तु ते भूता। ये भूता भूतले स्थिताः। ये भूता विघ्न कर्तारस्ते। नश्यन्तु शिवाज्ञया॥

अपक्रामन्तु भूतानि। पिशाचा सर्वतो दिशम्। सर्वेषाम् अविरोधेन। पूजा कर्म समारभे॥

॥ पवित्री करण ॥

क्रिया शरीर को परमात्मा से जोड़ती है तथा मन्त्र मन को परमात्मा से जोड़ते हैं। परमात्मा नित्य शुद्ध, बुद्ध है अतः सर्व प्रथम निम्न मन्त्र से गंगा जी का ध्यान कर जल के छींटे शरीर पर तथा पूजा सामग्री पर देते हुवे मन्त्र बोलें॥

गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति। नर्मदे सिंधु कावेरी, जले ऽस्मिन् संनिधिं कुरू॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

॥ आचमन ॥ *इन तीन मन्त्रों से तीन बार आचमन करें।*

ॐ केशवाय नमः॥ ॐ माधवाय नमः॥ ॐ नारायणाय नमः॥

इस मन्त्र को बोल कर हाथ धो लें। हृशीकेशाय नमः। गोविन्दाय नमः। हस्तौ प्रक्षाल्यम्॥

अथवा निम्न लिखित मन्त्रों से भी आचमन किया जा सकता है॥

ॐ आत्मतत्वं शोधयामि स्वाहा॥ *आचमन करें।* ॐ शिवतत्वं शोधयामि स्वाहा॥

आचमन करें। ॐ विद्यातत्वं शोधयामि स्वाहा॥ *आचमन करें।*

ॐ सर्वतत्वं शोधयामि स्वाहा॥ *हाथ धो लें।*

बांयें हाथ में थोड़ा सा जल लेकर दायें हाथ की अनामिका तथा मध्यमा उंगली से अङ्ग स्पर्श करें।

ॐ वाङ्मे आस्ये अस्तु। मुख का स्पर्श करें।

ॐ नसोर्मे प्राणो अस्तु। नांक का स्पर्श करें।

ॐ अक्ष्णोर्मे चक्षुरस्तु। आंखों का स्पर्श करें।

ॐ कर्णयोर्मे श्रोत्रमस्तु। कांनों का स्पर्श करें।

ॐ बाह्वोर्मे बलमस्तु। बांहों का स्पर्श करें।

ॐ ऊर्वो मे ओजोऽस्तु। जांघों को स्पर्श करें ।

बचा हुआ जल मस्तक के ऊपर से पूरे शरीर पर छिड़कें।

ॐ अरिष्टानि मे अङ्गानि तनुस्तन्वा मे सहसन्तु।

पूजन प्रारम्भ करने से पहले शुद्ध धुले हुवे वस्त्र पहन कर अन्य सभी प्रकार के कार्यों से निवृत हो मन तथा शरीर से परमात्मा के सान्निध्य में पूरी निष्ठा तथा भाव से बैठें। बैठने के लिए कुशासन, कम्बलासन, व्याघ्रचर्म या मृगचर्म का उपयोग किया जाता है।

॥ तिलक धारण ॥

तिलक के बिना सत्कर्म सफल नहीं होता। तिलक बैठ कर लगाना चाहिये। अपने आचार के अनुसार मिट्टि, चन्दन, और भस्म, इन में से किसी के द्वारा भी तिलक किया जा सकता है। भगवान पर चढ़ाने से बचे हुए चन्दन को ही लगाना चाहिये। अँगूठे से या अनामिका अंगुली से नीचे से ऊपर की ओर चन्दन लगायें।

नमो ब्रह्मण्य देवाय, गोब्राह्मण हिताय च। जगद्धिताय कृष्णाय, गोविन्दाय नमो नमः॥

उपर लिखे मन्त्र से ब्राह्मण यजमान को टीका करें।

चन्दनन्तु महत्पुण्यं पवित्रं पापनाशनम्।आपदं हरते नित्यं लक्ष्मिस्तिष्ठतु सर्वदा।

उपर लिखे मन्त्र से यजमान पुरोहित को कलावा बाँधे।

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणां। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

उपर लिखे मन्त्र से पुरोहित यजमान को रक्षाबन्धन करे।

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वामनु बध्नामि, रक्षे मा चल मा चल।

उपर लिखे मन्त्र से दाहिने हाथ की अनामिका अंगुली में पवित्री धारण करें।

ॐ कुशमूले ऽस्थितो ब्रह्मा, कुशमध्ये जनार्दनः। कुशाग्रे संस्थितो शम्भुः, त्रिभिर्देवा कुशस्थितौ॥

॥ प्राणायाम विधि ॥

तत्पश्चात प्राणायाम करें। विधि इस प्रकार है - सर्व प्रथम सुखासन में बैठ जायें, फिर दायें हाथ के अंगूठे से दायीं नासिका छिद्र को बन्द कर बाह्या रेचक करें। (भीतर की वायु को धीरे धीरे बाहर निकालें।) पुनः मन ही मन एक आवृति मन्त्र बोलते हुए वाम नासिका से स्वाँस भीतर को खींचे एवं चार आवृति (मन ही मन) मन्त्र बोलें। दो आवृति मन्त्र के साथ स्वास को दायीं नासिका से धीरे धीरे बाहर कर दें, इस प्रकार पूरक कुम्भक तथा रेचक की प्रक्रिया से प्राणायाम बनता है जो योग का चतुर्थ महत्वपूर्ण अंग है। कम से कम तीन प्राणायाम कर हाथ धो आचमन कर हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्नोक्त स्वस्ति वाचन करें।

॥ स्वस्ति वाचन ॥

ॐ आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतो ऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः।
देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्न-प्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥
देवानां भद्रा सुमति-र्ऋजू-यतां देवाना ꣳ रातिरभिनो निवर्त ताम्।
देवाना ꣳ सख्यमुपसे-दिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥
तान्पूर्वयानि विदा हूमहे वयं भगं मित्र-मदितिं दक्षमस्त्रिधम्।
अर्यमणं वरुण ꣳ सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥
तन्नो वातो मयो भु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः।
तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयो-भुवस्त-दश्विना श्रृणुतं धिष्ण्या युवम्॥
तमीशानं जगतस्-तस्थु-षस्पतिं धियञ्जिन्व-मवसे हूमहे वयम्।

पूषा नो यथा वेदसाम-सद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः ।

स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः ।

अग्निजिह्वा मनवः सूर-चक्षसो विश्वे नो देवा अवसाग-मन्निह ॥

भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्ये माक्षभि र्यजत्राः ।

स्थिरैरङ्गै-स्तुष्टुवा ꣳ सस्तनूभि र्व्यशेमहि देव हितं यदायुः ॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम् ।

पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या रीरिषता-युर्गन्तोः ॥

अदितिर्द्यौ-रदिति-रन्तरिक्ष मदिति-र्माता स पिता स पुत्रः ।

विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदिति-र्जात मदिति-र्जनित्वम् ॥ शु० य० २५ । १४ - २३ ॥

ॐ द्यौः शान्ति रन्तरिक्ष ꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ।

वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व ꣳ शान्तिः शान्ति रेव शान्तिः

सा मा शान्तिरेधि ॥ ॥ शु० य० ३६ - १७ ॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु । शं नः कुरु प्रजाभ्यो ऽभयं नः पशुभ्यः ॥

सुशान्तिर्भवतु ॥ ॥ शु० य० ३६ - २२ ॥

श्री मन्महागणाधिपतये नमः । लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः ।

उमा महेश्वराभ्यां नमः । वाणी हिरण्य गर्भाभ्यां नमः ।

शची पुरन्दराभ्यां नमः । माता पितृ चरण कमलेभ्यो नमः ।

इष्ट देवताभ्यो नमः । कुल देवताभ्यो नमः ।

ग्राम देवताभ्यो नमः । वास्तु देवताभ्यो नमः ।

स्थान देवताभ्यो नमः । सर्वेभ्यो देव्येभ्यो नमः ।

सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः । ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः ।

॥ गणपति वंदना ॥

सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विध्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशै तानि नामानि यः पठे क्षृणु यादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विध्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लांबरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विध्नोप शान्तये॥
अभीप्सितार्थ सिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्व विध्न हरस्तस्मै गणाधिपतयेनमः।
सर्व मङ्गल माङ्गल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तुते॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवं। वंदे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवन् मंगलाय तनं हरिः।

तदेव लग्नं सुदिनं तदेव, ताराबलं चन्द्रबलं तदेव।
विद्याबलं दैवबलं तदेव, लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रि, युगं स्मरामि॥

लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयोर्भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहं।
स्मृते सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः॥

हाथ मे रखे हुये अक्षत पुष्प पूजन की वेदी पर चढ़ा दें।

॥ संकल्प ॥

प्रत्येक सत् कर्म संकल्प पुरस्सर होता है, अतः हाथ में जल, पुष्प, अक्षत तथा पैसे रख कर निम्न मन्त्र बोलें।

हरिः ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः नमः परमात्मने श्री पुराण पुरुषोत्तमाय, विष्णो राज्ञया प्रवर्त मानस्य अद्य ब्रह्मणोऽह्नि, द्वितीय परार्धे श्रीश्वेत बाराह कल्पे वैवस्वत मंवन्तरे, अष्टा विंशति तमे, कलियुगे कलि प्रथम चरणे, भूर्लोके, आर्यावर्तैक देशान्तर्गत पुण्य पवित्र क्षेत्रे (अमुक) महाद्वीपे (अमुक) नगरे (अमुक) नाम ग्राम स्थाने शष्ट्यब्दानां मध्ये (अमुक) संवत्सरे अमुकायने महा मांगल्य प्रदे मासानां मासोत्तमे (अमुक) मासे, (अमुक) पक्षे, (अमुक) तिथौ, (अमुक) वासरे, नक्षत्रे, योगे, मुहूर्ते, लग्ने (अमुक)

काले (अमुक) गोत्र उत्पन्नः (अमुक) नामोऽहं (नाम्न्यहं - स्त्री के लिये) श्रुति स्मृति पुराणोक्त फल प्राप्त्यर्थम् मम स कुटुम्बस्य स परिवारस्य क्षेमस्थैर्यायुरारोग्यैश्वर्याभि बृध्यर्थम् आधि दैविक आधि भौतिक अध्यात्मिक त्रिविध ताप शमनार्थं धर्मार्थ काम मोक्ष प्राप्त्यर्थम् , श्री गौरि, गणेश, कलश, षोडशमात्रिका, नवग्रह आदिनां पूजन पूर्वकं भगवतो श्री सत्य नारायणस्य यथाविधि पूजनञ्चाऽहं करिष्ये ॥

हाथ का जलाक्षत सुरक्षित स्थान पर छोड़ दें। आगे पूजन का क्रम इस प्रकार रहेगा। सर्व प्रथम गणेश पूजन, फिर ईशान कोण में स्थित वरुण कलश पूजन, फिर गौर्यादि षोडश मातृका पूजन, सूर्यादि नवग्रह मंडल पूजन, पञ्चलोकपाल देवता पूजन, दश दिग्पाल देवता पूजन तथा अन्त में प्रधान देव - सत्य नारायण का पूजन होगा। पूजन शक्ति, समय तथा सामार्थ्य के अनुसार किया जा सकता है - यथाः

पञ्चोपचार - गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

दशोपचार - पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

षोडशोपचार .

पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, आभूषण, गन्ध, पुष्पाञ्जलि, धूप, दीप, नैवेद्य, आचमन, ताम्बूल, स्तुति, पुष्प तथा नमस्कार। यौं तो शास्त्रों में चौंसठ उपचार से भी पूजन सम्पन्न करने का विधान मिलता है लेकिन पूजा में वस्तु की अपेक्षा भाव का ही अधिक महत्व बताया गया है।

***ध्यान रहे किः** यहां पर संक्षिप्त पूजन का क्रम कहा गया है किन्तु विशाल यज्ञों में पूजन के क्रम में परिवर्तन तथा परिवर्धन होता है। एवं सम्प्रदाय अथवा उत्तर दक्षिणाञ्चलीय भेद से भी प्रत्येक क्रम तथा विधान में पार्थक्य दृष्टिगोचर होता है॥*

सर्व प्रथम बायीं ओर स्थित घण्टी का पूजन करें तथा घण्टा नाद करें।

॥ घण्टी पूजन मन्त्र ॥ आगमार्थम् तु देवानां, गमनार्थम् च रक्षसाम् ।
कुरू घण्टे वरं नादं, देवता स्थान सन्निधौ ॥ ॐ घण्टस्थ गरूड़ाय नमः।
पुष्प अक्षतां समर्पयामि ॥

॥ शङ्ख पूजन मन्त्र ॥ त्रैलोक्ये यानि तीर्थानि वासुदेवस्य चाज्ञया।
शङ्खे तिष्ठन्ति विप्रेन्द्र तस्मात् शङ्खं प्रपूजयेत्॥
ॐ पाञ्चजन्याय विद्महे पवमानाय धीमहि तन्नः शङ्ख प्रचोदयात्॥
पवमानाय नमः। पाञ्चजन्याय नमः। पद्मगर्भाय नमः।

अम्बुराजाय नमः। कम्बुराजाय नमः। धवलाय नमः।

त्वं पुरा सागरोत्पन्नो, विष्णुना विधृतः करे। निर्मितः सर्वदैवैश्च, पाञ्चजन्य नमोऽस्तु ते॥

ॐ शङ्खं पूजयामि, नमस्करोमि, पुष्पाक्षतां समर्पयामि।

॥ दीपक पूजन मन्त्र ॥

दीपो ज्योतिः परं ब्रह्म, दीप ज्योतिर्जनार्दनः। दीपो हरतु मे पापं, दीप ज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

भो दीप देवरूपस्त्वं, कर्म साक्षी ह्यविघ्नकृत्। यावत्कर्म समाप्तिः स्यात्, तावत्त्वं सुस्थिरो भव॥

क्रिया एवं भावनाः- *देव पूजा के क्रम में (देवालय को छोड़ कर) सर्व प्रथम उस देव का ध्यान तथा आवाहन किया जाता है। फिर पाद प्रक्षालन के लिये पाद्य, हस्त प्रक्षालन के लिये अर्घ्य, आचमन तथा स्नानार्थ जल दिया जाता है। पुनः पञ्चामृत से स्नान कराया जाता है। अन्य सुगन्धित द्रव्यों से भी स्नान "अभिषेक" करा कर शुद्ध वस्त्र तथा जनेउ प्रदान किया जाता है। पुनः गन्ध, अक्षत, पुष्प प्रदान करने के बाद, दक्षिण भारत में अंग पूजन का विशेष विधान होता है, जो नाम मन्त्रों से होता है। तदनन्तर धूप सुंधायें, दीपक दिखायें, हाथ धो कर नैवेद्य (प्रसाद) भगवान के समक्ष रखें उस में तुलसी दल छोड़ें (यदि विशिष्ट पूजन में निषेध न हो तो) पुनः ताम्बूल (पान) ऋतुफल तथा दक्षिणा समर्पित करने का विधान है। अन्त में आरती और पुष्पाञ्जलि करके हवन, पाठ, कथा कर प्रसाद ग्रहण करें। यहां पर सभी देवों का मात्र ध्यान तथा आवाहन दिया गया है किन्तु मन्त्र सभी देवताओं की पूजा के लिये सत्य नारायण पूजा के अनुसार ही रहेंगे, उन्हीं मन्त्रों से सभी देवों की पूजा की जा सकती है।*

॥ गणेशाम्बिका का ध्यान पूजन ॥

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवा महे, प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवा महे।

निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे, वसो मम। आहमजानि गर्भधमा, त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके, न मा नयति कश्चन। ससस्त्य श्वकः सुभद्रिकां, काम्पील वासिनीम्।

सर्व मंगल मांगल्ये, शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्र्यम्बिके गौरि, नारायणि नमोऽस्तु ते॥

सर्वदा सर्वकार्येषु, नास्ति तेषाम मंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवन्, मंगलाय तनं हरिः॥

ॐ गं गणपतये नमः आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, आवाहनार्थे अक्षतान् समर्पयामि नमस्करोमि॥ ॐ भूर्भुव स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महा गणाधिपतये नमः॥

*आवाहन के पश्चात पूर्वोक्त क्रम के अनुसार पूजन करना चाहिये। मन्त्र **सत्य नारायण** पूजा विधि से प्रयोग करने चाहिये, मन्त्र की समाप्ति पर कहना चाहिये।*

गणेशाम्बिकाभ्यां नमः पुष्पाणि, अक्षतान् इत्यादि समर्पयामि।

॥ अग्न्युत्तारण विधि ॥

प्रतिमा अथवा यन्त्र को शुद्ध धृत से लेपन कर उसे एक बर्तन में रखें तथा उसके ऊपर दुग्ध और जल की धारा देते हुये मन्त्र बोलें -

ॐ प्राणदा अपानदा व्यानदा व्वर्चोदा व्वरिवोदाः।

अन्यास्ते अस्मत्तपन्तु हेतयः पावको अस्मभ्य ꣳ शिवोभव॥

॥ प्राण प्रतिष्ठा ॥

यन्त्र अथवा मूर्ति को कपड़े आदि से पोंछ कर अन्य पात्र में रखें तथा दायें हाथ से मूर्ति या यन्त्र का स्पर्श कर भावना करें कि यन्त्र आदि सजीवता को प्राप्त हो रहे हैं।

ॐ आं ह्रीं क्रौं यं रं लं वं शं षं सं हं क्षं हं सः।

सोऽहं अस्याः अमुकदेव प्रतिमायाः प्राणा इह प्राणाः।

ॐ आं॰ अस्याः अमुक अमुकदेव प्रतिमायाः जीव इह स्थितः।

ॐ आं॰ अस्याः अमुक अमुकदेव प्रतिमायाः सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनस्त्वक् चक्षुः श्रोत्र जिह्वा।

घ्राणपाणिपाद पायूपस्थानि इहै वागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा॥

हाथ में पुष्प लेकर भावना करें की मूर्ति या यन्त्र संजीवता को प्राप्त हो रही है।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ

समिमं दधातु। विश्वेदेवा स इह मादयन्तामों - २ प्रतिष्ठः॥

॥ गणपति आवाहन ॥ *हाथ में अक्षत लेकर आवाहन करें।*

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे। प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे। निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ सहस्र शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात्। स भूमि ꣳ सर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठ द्दशाङ्गुलम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महागणाधिपतये नमः॥

गणपतिं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, नमस्करोमि च, अक्षतां समर्पयामि ॥

॥ आसनम् ॥

ॐ पुरुष एवेद ꣳ सर्वं यद्भूतं यच्च भव्यम्। उतामृतत्वस्येशानो यदन्ने नाति रोहति ॥

अनेक रत्न संयुक्तं नानामणि गणान्वितं। इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आसनार्थे पुष्पाणि समर्पयामि ॥

॥ पाद्यम् ॥

ॐ एता वानस्य महिमातो ज्या याँश्च पूरुषः। पादोऽस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि ॥

गङ्गादि सर्व तीर्थेभ्यो, आनीतं तोयमुत्तमम्। पाद्यार्थम् ते प्रदास्यामि, गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पादयोर्पाद्यम समर्पयामि ॥

॥ अर्घ्यम् ॥

ॐ त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादो ऽस्येहाभवत् पुनः ।ततो विष्वङ्ग व्यक्रामत्साशनानशने अभि ॥

गन्ध पुष्पाक्षतैर्युक्तं, अर्घ्यम् सम्पादितं मया। गृहाण पंच देवत्वं, प्रसन्ना भव सर्वदा ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः हस्तयोरर्घ्यम् समर्पयामि ॥

॥ आचमनीयम् ॥

ॐ ततो विराड़ जायत विराजो अधि पूरुषः। स जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमि मथो पुरः ॥

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं। स्वादु शीतलम्। तोयं आचमनीयार्थम् । गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः मुखे आचमनीयं जलं समर्पयामि

॥ स्नानम् ॥

ॐ तस्माद्यज्ञात् सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्। पशूंक्ताँश्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च ये ॥

मन्दाकिन्यस्तु यद्वारि सर्व पापहरं शुभं। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सर्वाङ्गे स्नानीयम् जलं समर्पयामि ॥

॥ दुग्ध स्नानम् ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दुग्ध स्नानम् समर्पयामि ॥ पुनः जल स्नानम् ॥

॥ **दधि स्नानम्** ॥

ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्रण आयू ꣳ षीतारिषत्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दधि स्नानम् समर्पयामि॥ पुनः जल स्नानम्॥

॥ घृत **स्नानम्**॥ ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसा पावानः पिबतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा।
दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः घृत स्नानम् समर्पयामि॥ पुनः जल स्नानम्॥

॥ **मधु स्नानम्**॥ ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्तोषधीः।
मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ - २
अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः मधु स्नानं समर्पयामि॥ पुनः जल स्नानम्॥

॥ **शर्करा स्नानम्**॥

ॐ अपा ꣳ रस मुद्वयस ꣳ सूर्ये सन्त ꣳ समाहितम्। अपा ꣳ रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तममुपयाम
गृहीतो ऽ सीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णामेष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्ट तमम्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः शर्करा स्नानम् समर्पयामि॥ पुनः जल स्नानम्॥

॥ **पञ्चामृत स्नानम्**॥

ॐ पञ्चनद्यः सरस्वती मपि यन्ति सस्रोतसः। सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेऽभवत्सरित्॥

पयो दधि धृतं चैव। मधुं च शर्करान्वितं।पञ्चामृतं मयाऽऽनीतं। स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पञ्चामृत स्नानं समर्पयामि॥ पुनः जल स्नानम्॥

॥ **शुद्धोदक स्नानम्**॥ ॐ शुद्धवालः सर्व शुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः।
श्येतः श्येताक्षो ऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा। अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः॥

शुद्धं यत्सलिलं दिव्यं, गङ्गाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्तया, स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि॥

॥ **वस्त्रम्** ॥

ॐ तस्मादश्वा अजायन्त ये केचो भयादतः। छन्दा ꣳसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्माद जायत॥

शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालङ्करणं वस्त्रमतः शान्तिं प्रयच्छ मे॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥

॥ **उपवस्त्रम्** ॥

उपवस्त्रं प्रयच्छामि देवाय परमात्मने । भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः उपवस्त्रं समर्पयामि ॥

॥ **आभूषणम्** ॥ *वज्रमाणिक्य वैदूर्य मुक्तां विद्रुम मण्डितं । पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम् ॥*

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः आभूषणं समर्पयामि ॥

॥ **यज्ञोपवीतम्** ॥ ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात् ।
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्चशुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः ।
नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम् । उपवीतं मया दत्तं ।
गृहाण गणनायक ॥ *परमेश्वरः* *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि ॥*

॥ **चन्दनम्** ॥ ॐ तं यज्ञं वर्हिषि प्रौक्षन् पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः । गन्ध स्नानं समर्पयामि ॥*
श्री खण्ड चन्दनं दिव्यं, गन्धाढयं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ, चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः चन्दनं समर्पयामि ॥*

॥ **सिन्दूरम्** ॥ सिन्दूर मरुणाभासं, जपा कुसुम संनिभं ।
अर्पितं ते मया भक्तया, प्रसीद परमेश्वर ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सिन्दूरं समर्पयामि ॥*

॥ **अक्षतान्** ॥ ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यवप्रिया अधूषत । अस्तोषत
स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योजा न्विन्द्र ते हरी ॥
अक्षताँश्च सुरश्रेष्ठा, कुङ्कुमाक्ताः सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्तया, गृहाण परमेश्वर ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः अक्षताँ समर्पयामि ॥*

ध्यान रहेः शालिग्राम पर अक्षत नहीं चढ़ाए जाते हैं । अतः श्वेत तिल अथवा कुंकुमाक्त अक्षत अर्पित करें ।

॥ **पुष्प माला** ॥ ॐ यत्पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यक्तल्पयन् । मुखं किमस्यासीत् किंबाहू किमुरू पादा उच्येते ॥
माल्यादीनि सुगंधीनि, मालत्यादीनि वै प्रभो । मयानीतानि पुष्पाणि, गृहाण परमेश्वर ॥
ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पुष्पाणि पुष्पमालां समर्पयामि ॥

॥ **तुलसी पत्रम्** ॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम् । समूढ मस्य पा ꣳ सुरे स्वाहा ॥
तुलसीं हेमरुपां च रत्नरूपां च मञ्जरीम् । भव मोक्ष प्रदां तुभ्यमर्पयामि हरि प्रियाम् ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः तुलसी दलं समर्पयामि ॥

॥ *दूर्वाङ्कुरान्* ॥ ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि ।

एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्त्रेण शतेन च ॥ *ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः दूर्वाङ्कुरान् समर्पयामि ॥*

॥ **सुगन्धित तैलम्** ॥ ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुँ ज्यायाहेति परिवाधमानः ।

हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा ꣳ संपरिपातु विश्वतः ॥

तैलानि च सुगंधीनि द्रव्याणि विविधानि च । मया दत्तानि लेपार्थं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः सुगन्धित तैलं समर्पयामि ॥

॥ **अंग पूजम्** ॥

ॐ अनघाय नमः पादौ पूजयामि ।

ॐ गोपालाय नमः गुल्फौ पूजयामि ।

ॐ जन्म रहिताय नमः जानुनी पूजयामि ।

ॐ पूतना वैरिणे नमः ऊरुं पूजयामि ।

ॐ शकटा शुर भंजनाय नमः कटिं पूजयामि ।

ॐ नवनीत प्रियाय नमः नाभिं पूजयामि ।

ॐ उत्तालताल भेत्रे नमः उदरं पूजयामि ।

ॐ वनमालिने नमः वक्षं पूजयामि ।

ॐ चतुर्भुजाय नमः हस्तान् पूजयामि ।

ॐ कंसारये नमः कण्ठं पूजयामि ।

ॐ मथुरा नाथाय नमः मुखं पूजयामि ।

ॐ केवल सम्पत्प्रदाय नमः कपोलौ पूजयामि ।

ॐ कंजलोचनाय नमः कर्णौ पूजयामि ।

ॐ ललिताकृतये नमः ललाटं पूजयामि ।

ॐ शुक संस्थिताय नमः शिरः पूजयामि ।

ॐ ज्ञानात्मने नमः अलकान् पूजयामि ।

ॐ सर्वेश्वराय नमः सर्वाणि अंगानि पूजयामि ।

॥ **धूपम्** ॥ ॐ ब्रह्मणो ऽस्य मुख मासीद वाहू राजन्यः कृतः।

ऊरुतदस्य यद्वैश्यः पद्भ्या ꣳ शूद्रो अजायत्॥

वनस्पति रसोद्भूतो, गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्व देवानां, धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः धूपं आघ्रापयामि॥

॥ **दीपम्** ॥ ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत॥ *साज्यं च वर्ति संयुक्तं, वाह्निना योजितं मया।*

दीपं गृहाण देवेश, त्रैलोक्य तिमिरापहम्॥ ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः प्रत्यक्ष दीपं दर्शयामि॥

दीपक दिखाकर हाथ धोलें तथा नैवेद्य भगवान के सामने रखकर तुलसी दल डालें।

॥ **नैवेद्यम्** ॥ ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्तत।

पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात्तथा लोकां २ अकल्पयन्॥

शर्करा खण्ड खाद्यानि, दधि क्षीर घृतानि च। आहारं भक्ष्य भोज्यं च, नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्॥

ब्रह्मार्पणम् ब्रह्महर्वि ब्रह्माग्नौ ब्रह्मणाहुतम् । ब्रह्मैव तेन गन्तव्यम् ब्रह्म कर्म समाधिना॥

ॐ प्राणाय स्वाहा। ॐ अपानाय स्वाहा। ॐ व्यानाय स्वाहा।

ॐ उदानाय स्वाहा। ॐ समानाय स्वाहा।

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि मध्ये मध्ये पानीयं समर्पयामि। पुनराचमनीयं समर्पयामि॥

॥ **ऋतु फलम्** ॥ ॐ या फलिनि या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः।

बृहस्पति प्रसूतास्तां नो मुञ्चन्त्व ꣳ हसः॥ *इदं फलं मया देव, स्थापितं पुरतस्तव।*

तेन मे सफला वाप्तिर्भवे जन्मनि जन्मनि॥ ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः ऋतु फलं समर्पयामि॥

॥ **ताम्बूलम्** ॥ ॐ यत्पुरुषेण हविषा देवा यज्ञ मतन्वत।

वसन्तो ऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः॥

पूगीफलं महद्दिव्यं, नागवल्ली दलैर्युतम्। एला लवङ्ग संयुक्तं, ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः एला लवङ्ग पूगीफल युत ताम्बूलं समर्पयामि॥

॥ **हस्तौ प्रक्षाल्य** ॥ *हृशीकेशाय नमः॥*

॥ **द्रव्य दक्षिणा** ॥ ॐ हिरण्यगर्भः समवर्तताग्रे भूतस्यजातः पतिरेक आसीत्।

स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां कस्मै देवाय हविषा विधेम॥

दक्षिणां हेमसहितं यथा शक्ति समर्पितं। अनन्त फलदामेनं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ श्री सत्य नारायणाय नमः पूजाया षाड्गुण्यार्थे द्रव्य दक्षिणां समर्पयामि ॥

श्री सत्य नारायण अर्चना –

जिस प्रकार भगवान शंकर को अभिषेक भगवती देवी को हवन प्रिय है उसी प्रकार भगवान विष्णु को अर्चना प्रिय है। अर्चना चावलों या फूल की पंखुड़ियों के द्वारा अथवा सिक्कों से भी की जाती है। एक एक मन्त्र के साथ नम बोलते हुए अर्च्य द्रव्य भगवान के चरणों में समर्पित करना चाहिए ॥

श्री सत्य नारायण शत नामावलिः ॥

विशेषार्ध्य *– ताम्र पात्र में जल, चन्दन, अक्षत, फल, फूल, दूर्वा, सुपारी और दक्षिणा रखकर अर्ध्य पात्र को हाथ में लेकर निम्नोक्त मन्त्र बोलना चाहिये –*

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक। भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्।

द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो। वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।

अनेन सफलार्ध्येण वरदोऽस्तु सदा मम।

॥ प्रार्थना ॥

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय। लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय ॥

नागाननाय श्रुति यज्ञ विभूषिताय। गौरी सुताय गणनाथ नमो नमस्ते ॥

स शङ्ख चक्रं सकिरीट कुण्डलं सपीत वस्त्रं सरसी रुहेक्षणम।

स हार वक्षस्थल शोभि कौस्तुभं नमामि विष्णुं सिरसा चतुर्भुजम ॥

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभाङ्गम् ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

॥ शिव जी का ध्यान ॥

यस्याङ्के च विभाति भूधर सुता देवापगा मस्तके । भालेबाल विधुर्गले च गरलम् यस्योरसि ब्यालराट् ।

सोऽ यं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा । शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्रीशंकरः पातु माम् ॥

वन्दे देव उमापतिं सुरगुरुं,वन्दे जगत्कारणम् ।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं,वन्दे पशूनां पतिम् ॥
वन्दे सूर्य शशांक वह्नि नयनं,वन्दे मुकुन्दप्रियम् ।
वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं,वन्दे शिवंशंकरम् ॥

॥ कलश स्थापन पूजन ॥

वेदी के ईशान कोण में वरुण कलश की स्थापना करनी चाहिये। यह कोण पूर्वोत्तर कोण कहलाता है। कलश में पञ्चरत्न, सप्तमृतिका, पञ्चपल्लव, चन्दन, दूब, सुपारी एवं पैसा डाल कर उसे वस्त्र से परिवेष्टित कर उसके ऊपर पूर्ण पात्र (चावल से भरा हुवा पात्र) रखें तथा उसके ऊपर वस्त्राच्छादित नारियल रखें। कलश में वरुण देव का ध्यान और आवाहन करें।

ॐ भूरसि भूमिरसि अदितिरसि विश्वधाया विश्वस्य भुवनस्य धार्त्री ।

पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ(गुँ)ह पृथ्वीं मा हि(गुँ)सीः॥

इसके बाद सप्तधान्य या गेहूँ, अक्षत उस स्थान पर अर्पित करने के बाद कलश को उस पर स्थापित करें। स्थापना के समय निम्न मंत्र का उच्चारण किया जाता है :-

ॐ आ जिघ्र कलशं मह्या त्वा विशन्त्वन्दनवः । पुनरुर्जा नि वर्तस्व सा नः सहस्रं
धुक्ष्वोरुधारा पयस वती पुनर्मा विशताद्रयिः ॥

इसके बाद कलश में जल भरकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें :-

ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य, स्कम्भसर्जनी स्थो वरुणस्य
ऋतसदन्यसि वरुणस्य ऋतसदन्मसि, वरुणस्य ऋतसदनमा सीद ।

मंगल द्रव्य स्थापन / हल्दी / सुपारी / दूब / कुश / पंचरत्न / द्रव्य दक्षिणा

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा बन्द मानस्तदा, शास्ते यजमानो हविर्भिः ।
अहेड़मानो वरुणेह वोध्युरूशꣳ, स मा न आयुः प्र मोषीः ॥
अस्मिन् कलशे वरुणं साङ्गं सपरिवारं, सायुधं सशक्तिकं आवाहयामि ।
वरुणाद्यावाहित देवताभ्यो नमः, ध्यानार्थे पुष्पं समर्पयामि । ॐ अपांपते वरुणाय नमः ॥

पुनः हाथ में अक्षत पुष्प लेकर कलश में वेदों, तीर्थों, नदियों, सागरों एवं देवी देवताओं का आवाहन करें।

कलशस्य मुखे विष्णु, कण्ठे रुद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा, मध्ये मातृगणा स्मृताः॥

कुक्षौ तु सागराः सर्वे, सप्त द्वीपा बसुन्धरा। ऋगवेदो ऽथ यजुर्वेदः, सामवेदोः ह्यथर्वणः॥

अङ्गैश्च सहीताः सर्वे, कलशं तु समाश्रिताः। आयान्तु देव पूजार्थम्, दुरित क्षय कारकाः॥

गङ्गे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति।नर्मदे सिंधु कावेरी, जले ऽस्मिन् संनिधिं कुरू॥

सर्वे समुद्राः सरितः, तीर्थानि जलदा नदाः। आयन्तु मम शान्त्यर्थम् दुरित क्षय कारकाः॥

पश्चात पूर्व क्रमानुसार प्रतिष्ठा,पाद्य अर्घ्यादि उपचारों से पूजन कर कर्पूर आरती, पुष्पाञ्जली के उपरान्त निम्न लिखित प्रार्थना मन्त्रों को बोलें।

पञ्चोपचार – गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

दशोपचार – पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्ध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य।

देव दानव संवादे मथ्यमाने महोदधौ। उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ विधृतो विष्णुना स्वयम्।

त्वत्तोये सर्व तीर्थानि देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः। त्वयि तिष्ठान्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।

शिवः स्वयं त्वमेवासित्, विष्णु त्वं च प्रजापतिः। आदित्या वसवो रूद्रा विश्वे देवा स पैतृकाः।

त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः काम फल प्रदाः। त्वत्प्रसादादिमां पूजां कर्तुमीहे जलोद्भव।

सांनिध्यं कुरुमे देव प्रसन्नो भव सर्वदा॥ ॐ अपां पतये वरुणाय नमः। प्रर्थना पूर्वक नमस्कारं करोमि॥

षोडश मातृका पूजन।

१६ आत्मनः कुल देवता	१२ लोक मातरः	८ देव सेना	४ मेधा
१५ तुष्टिः	११ मातरः	७ जया	३ शची
१४ पुष्टिः	१० स्वाहा	६ विजया	२ पद्मा
१३ धृतिः	९ स्वधा	५ सावित्री	१ गौरी गणेश

कोष्टक में दिखाये क्रम से ही मातृकाओं का पूजन होता है, हाथ में अक्षत पुष्प लेकर नाम मन्त्रों से प्रत्येक कोष्टक में आवाहन - स्थापन करते जायें।

षोडश मातृका रहस्य

किसी भी प्रकार की मंगलकामना और कार्य के निर्विध्न संपादन व संचालन के लिए भगवान गजानन के साथ ही सोलह मातृकाओं का स्मरण और पूजन अवश्य करना चाहिए।

अनुष्ठान में अग्निकोण की वेदिका या पाटे पर सोलह कोष्ठक के चक्रकी रचना कर उत्तर मुख या पूर्व मुख के क्रम से सुपारी व अक्षत पर क्रमशः इन 16 मातृकाओंकी पूजा का विधान है इससे न केवल कार्यकी सिद्धि होती है बल्कि उसका संपूर्ण फल भी प्राप्त होता है।

ये 16 मातृकाएं निम्नलिखित है -

---

१ - ॐ गणपतये नमः गणपति मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१ - ॐ गौर्यै नमः गौरी मावाहयामि, स्थापयामि ॥

२ - ॐ पद्मायै नमः पद्मा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

३ - ॐ शच्यै नमः शची मावाहयामि, स्थापयामि ॥

४ - ॐ मेधायै नमः मेधा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

५ - ॐ सावित्र्यै नमः सावित्री मावाहयामि, स्थापयामि ॥

६ - ॐ विजयायै नमः विजया मावाहयामि, स्थापयामि ॥

७ - ॐ जयायै नमः जया मावाहयामि, स्थापयामि ॥

८ - ॐ देव सेनायै नमः देव सेना मावाहयामि, स्थापयामि ॥

९ - ॐ स्वधायै नमः स्वधा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१० - ॐ स्वाहायै नमः स्वाहा मावाहयामि, स्थापयामि ॥

११ - ॐ मातृभ्यो नमः मातृ मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१२ - ॐ लोक मातृभ्यो नमः लोक मातृ मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१३ - ॐ धृत्यै नमः धृति मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१४ - ॐ पुष्टयै नमः पुष्टि मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१५ - ॐ तुष्टयै नमः तुष्टि मावाहयामि, स्थापयामि ॥

१६ - ॐ आत्मनः कुलदेवतायै नमः आत्मनः कुलदेवता मावाहयामि,स्थापयामि ॥

ॐ गणेश सहित गौर्यादि षोडश मातृकाभ्यो नमः। आवाहिते कर्मणि पाद्यार्घ्यम आचमनीय, वस्त्रोपवस्त्र, धूप, दीप, नैवेद्य, ऋतुफलादीन् समर्पयामि नमस्करोमि।

इतने उपचार कर हाथ में पुष्प ले प्रार्थना करें।

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।
धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः॥

ब्रह्माणी कमलेंदु सौम्याः वदना माहेश्वरी लीलया।।
कौमारी रिपुदर्प नाशन करी चक्रा युद्धा वैष्णवी।।
वाराही घनघोर घर मुखा चैन्द्री च वज्रा युधा।।
चामुंडा गणनाथ रूद्र सहित रक्षन्तु नो मातर

नवग्रह मण्डल पूजन ॥

ईशान	पूर्व	अग्नि
N.E	East	S.E

ब्रह्मा	इन्द्र	
विष्णु विष्णु **४ - बुध**	इन्द्राणी इन्द्र **६ - शुक्र**	अप् उमा **२ - चन्द्र**
इन्द्र ब्रह्मा **५ - गुरु**	अग्नि ईश्वर **१ - सूर्य**	पृथ्वी स्कन्द **३ - मंगल**
ब्रह्मा चित्रगुप्त **९ - केतु**	प्रजापति यम **७ - शनि**	सर्प काल **८ - राहु**

North — South

कुबेर

यम वायु

N.W	West	S.W

सूर्य का आवाहन करें - सूर्य - रवी (SUN)(Centre) मध्य में गोलाकार - लाल।

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यञ्च।

हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महद्द्युति । तमोरिंसर्व पापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकर ।। १ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय नमः श्री सूर्य मावाहयामि स्थापयामि।

चन्द्रमाँ का आवाहन करें - चन्द्र (MOON)(S.E.) अग्निकोण में - श्वेत।

ॐ इमं देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते जेष्ठ्याय महते । जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय।

इममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी, राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा॥

दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवं ।नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषण ।। २ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः सोमाय नमः सोम मावाहयामि स्थापयामि।

मंगल का आवाहन करें – मंगल (MARS)(South) दक्षिण में – लाल।

ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥

धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांतीं समप्रभ । कुमारं शक्तिहस्तं मंगलं प्रणमाम्यहं ।। ३ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय नमः भौम मावाहयामि स्थापयामि।

बुध का आवाहन करें – बुध (MERCURY)(N.E.) ईशान में – हरा।

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च।

अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

प्रियंगुकलिका श्यामं रुपेणा प्रतिमं बुध ।सौम्यं सौम्य गुणपेतं तं बुधं प्रणमाम्यह ।। ४ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय नमः बुध मावाहयामि स्थापयामि।

गुरु का आवाहन करें – बृहस्पति (JUPITER)(North) उत्तर में – पीला।

ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

यद्दीदयच्छवस ऋृत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

देवानांच ऋषीनांच गुरुंकांचन सन्निभ ।बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पति ।। ५ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये नमः बृहस्पति मावाहयामि स्थापयामि।

शुक्र का आवाहन करें – शुक्र (VENUS)(East) पूर्व में – श्वेत।

ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयो ऽमृतं मधु॥

हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरु । सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यह ।। ६ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय नमः शुक्र मावाहयामि स्थापयामि।

शनि का आवाहन करें – शनि (SATURN)(West) पश्चिम में – काला।

ॐ शंनो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि श्रवन्तु नः॥

नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रज ।छायामार्तंड संभूतं तं नमामि शनैश्चर ।। ७ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चराय नमः शनि मावाहयामि स्थापयामि।

राहुका आवाहन करें – राहु (NORTH NODE)(S.W.) नैर्ऋत्य में – काला।

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधाः सखा। कया शचिष्ठया वृता॥

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दन । सिंहिका गर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यह ।। ८ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे नमः राहु मावाहयामि स्थापयामि।

केतु का आवाहन करें – केतु (SOUTH NODE)(N.W.) वायव्य में – काला।

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेश से। समुषद्भिरजायथाः॥

पलाशपुष्प संकाशं तारका ग्रह मस्तक ।रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यह ।। ९ ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे नमः केतु मावाहयामि स्थापयामि।

अधि देवता आवाहन-

ईश्वराय नमः । उमाय नमः । स्कन्दाय नमः । विष्णवे नमः । ब्रह्मणे नमः । इन्द्राय नमः । यमाय नमः । कालाय नमः । चित्रगुप्ताय नमः ॥ अधि देवताभ्यो नमः ॥

प्रत्यधि देवता आवाहन-

अग्नये नमः । अद्भ्यो नमः। पृथिव्यै नमः। विष्णवे नमः। इन्द्राय नमः। इन्द्राण्यै नमः। प्रजापतये नमः। सर्पेभ्यः नमः। ब्रह्मणेभ्यो नमः॥ प्रत्यधि देवताभ्यो नमः ॥

पञ्च लोकपाल आवाहन-

गणपतये नमः। दुर्गायै नमः। वायवे नमः। आकाशाय नमः। शिवाय नमः। पञ्चलोकपाल देवताभ्यो नमः ॥

दश दिग्पाल आवाहन-

इन्द्राय नमः। अग्नये नमः। यमाय नमः। निर्ऋतये नमः। वरुणाय नमः। वायवे नमः। आकाशाय नमः। ईशानाय नमः। ब्रह्मणे नमः। अनन्ताय नमः ॥ दशदिकपाल देवताभ्यो नमः ॥

इस प्रकार आवाहन के बाद हाथ में अक्षत लेकर मण्डल पर छोड़ते हुये निम्नोक्त मन्त्र से भावना करें कि मन्त्र बल से ग्रह साक्षात जीवन्त हो कर यहां उपस्थित हो रहे हैं।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञ मिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ꣳ समिमं दधातु।

विश्वेदेवां स इह मादयन्तामों - ३ प्रतिष्ठः॥ *ॐ आवाहित सूर्यादि नवग्रह मण्डल देवेभ्यो नमः॥*

प्राण प्रतिष्ठा के बाद पूर्वोक्त क्रमानुसार पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार पूजन कर निम्न प्रार्थना बोलनी चाहिए।

॥ नवग्रह प्रार्थना ॥

ॐ ब्रह्मा मुरारी स्त्रिपुरान्तकारी, भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च।

गुरूश्च शुक्रः शनि राहु केतवः, सर्वे ग्रहाः शान्ति करा भवन्तु॥

सूर्यः शौर्य मथेन्दु रुच्च पदवीं, संमङ्गलं मङ्गलः, सद्बुद्धिं च बुधो गुरूश्च गुरुतां, शुक्रः सुखं शं शनिः।

राहुर्बाहु बलं करोतु सततं, केतुः कुलस्योन्नतिं। नित्यं प्रीति करा भवन्तु मम ते, सर्वे ऽनुकूला ग्रहाः॥

कृतेन अनेन पूजनेन, सूर्यादि नवग्रहः प्रियतां न मम्॥ बोलो सूर्यादि नवग्रह देव की जय॥

सर्वदेव प्रार्थना ॥

ॐ नमो ऽस्त्वनन्ताय सहस्त्र मूर्तये सहस्त्र पादाक्षि शिरो रूबाहवे ।

सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्त्र कोटी युग धारिणे नमः ॥

अनेन अस्माभि कृतेन पूजनेन गणपत्याद्यावाहिता देवताः सन्तुष्टाः वरदाः शान्तिदाः भवन्तु ।

संक्षिप्त वैदिक आरती ॥ सर्व प्रथम चरणों में **चार बार,** नाभि में **दो बार,** मुख मण्डल में **एक बार,** आरती करने के बाद समस्त अंगों की सात बार आरती होती है । फिर शंख में रखे हुवे जल को भगवान के चारो ओर धुमा कर उन्हें निवेदित करना चाहिए ॥

मन्त्रः-

ॐ इदꣳ हविः प्रजननं मे अस्तु दशवीरꣳ सर्वगणꣳ स्वस्तये । आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभय सनि ।अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयोरेतो अस्मासु धत्त ॥

ॐ आरार्तिक्यं समर्पयामि ॥

हाथ में पुष्प लेकर प्रार्थना करें ।

॥ पुस्तक पूजा ॥

या कुन्देन्दु तुषार हार धवला या शुभ्र वस्त्रावृता । या वीणा वर दण्ड मण्डित करा या श्वेत पद्माशना ॥

या ब्रह्माच्युत शंकर प्रभृति भिर्देवैसदा वन्दिता । सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेष जाड्यापहा ॥

श्री सरस्वत्यै नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षत पुष्पाणि समर्पयामि ॥

॥ हवन मन्त्र ॥ *॥ अथ कुश कण्डीका करणम् ॥*

स्रुव पूजनम् - स्रुवका पूजन कर के सब सामग्री चढावे और हाथ जोडे ।

ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमम्पुरस्ताव्दिसीमतः सुरचो व्वेन आवः ।

सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विव्वः ॥

नूतन कांस्यपात्रेण अग्निमानीय स्वाभिमुखं निदध्यात् ।

नये काँसे के पात्र में अग्नि लाकर अपने पास रखें ।

अग्नि जला कर उसका आवाहन करें तथा निम्न मन्त्र से अग्नि की प्रार्थना करें ।

ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जाग्रहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च ।

अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वे देवा यजमानश्च सीदत ॥

मुखं समस्त देवानां खांडवोद्यान दाहकम् । पूजितं सर्व यज्ञेषु अग्नि मावाहयाम्यहम् ॥

अग्नये नमः, आवाहयामि, पूजयामि, नमस्करोमि च ॥

कर्पूर जला कर निम्न मन्त्र से अग्नि प्रज्वलित करें ।

ॐ भूर्भुवः स्वः । ॐ भूर्भुवः स्वद्यौरिव भूम्ना, पृथिवीव वरिम्णा ।

तस्यास्ते पृथिवि देव यजनि, पृष्ठे ऽग्नि मन्नादमन्ना द्यायादधे ॥

अग्नये नमः, आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, ध्यायामि च ॥

हाथ जोड कर अग्नि का पूजन करें ।

ॐ अग्नि दूतं पुरोदधे हव्यावाह मुपब्रुवे । देवाँ आसादयादिह ॥

एक एक समिधा को बीच में पकड़ कर दोनो ओर धी में डुबो कर निम्न मन्त्रों से तीन समिधायें दें ।

॥ १ ॥ ॐ अयन्त इध्म आत्मा, जात वेदस्तेने ध्यस्व वर्धस्व । चेद्धवर्धय चास्मान् प्रजया, पशुभिर्ब्रह्म वर्चसेनान्नाद्येन समेधय स्वाहा ॥ *इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम् ॥*

॥ २ ॥ ॐ समिधाऽग्निं दुवस्यत, घृतैर्बोधयता तिथिम् । आस्मिन् हव्या जुहोतन ॥ ॐ सु समिद्धाय शोचिषे, धृतं तीव्रं जुहोतन । अग्नये जातवेदसे स्वाहा ॥ *इदं अग्नये जातवेदसे इदं न मम् ॥*

॥ ३ ॥ ॐ तन्त्वा समिद्भिरंगिरो, घृतेन वर्द्धयामसि । बृहच्छोचा यविष्ठय स्वाहा ॥

इदं अग्नये अंगिरसे इदं न मम् ।

हवन कुण्ड के चारो ओर जल प्रोक्षण करें ।

ॐ अदिते ऽनुमन्यस्व ॥ पूर्व में ।

ॐ अनुमते ऽनुमन्यस्व ॥ पश्चिम में ।

ॐ सरस्वत्य ऽनुमन्यस्व ॥ उत्तर में ।

ॐ देव सवितः प्रसुव यज्ञं, प्रसुव यज्ञ पतिं भगाय । दिव्यो गन्धर्वः केतपूः केतं नः , पुनातु वाचस्पतिर्वाचं नः स्वदतु ॥ चारो ओर ।

निम्न मन्त्रों से धृत की आहुतियां दें । बचे हुवे धी को प्रोक्षणी पात्र में डालें ।

१ । ॐ प्रजापतये स्वाहा । इदं प्रजापतये इदं न मम ।

२। ॐ इन्द्राय स्वाहा। इदं इन्द्राय इदं न मम।

३। ॐ अग्नये स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।

४। ॐ सोमाय स्वाहा। इदं सोमाय इदं न मम

५। ॐ भूः स्वाहा। इदं अग्नये इदं न मम।

६। ॐ भुवः स्वाहा। इदं वायवे इदं न मम।

७। ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम।

सामग्री की आहुतियां डालें - साथ मे धी की आहुतियां देते रहें।

ॐ गणानां त्वा गणपति ꣳ हवामहे। प्रियाणां त्वा प्रियपति ꣳ हवामहे। निधीनां त्वा निधिपति ꣳ हवामहे वसोमम। आहम जानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ गणाधिपतये स्वाहा॥

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमानयति कश्चन । ससत्स्यकश्चकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीं ।।ॐ गौर्यै स्वाहा॥

ॐ गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः। धृतिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडशः॥

ॐ शोडषमात्रिकाभ्यो स्वाहा

1. **ॐ गौर्यै स्वाहा॥**	9. **ॐ स्वधायै स्वाहा॥**
2. **ॐ पद्मायै (लक्ष्म्यै) स्वाहा॥**	10. **ॐ स्वाहायै स्वाहा॥**
3. **ॐ शच्यै स्वाहा॥**	11. **ॐ मातृकायै स्वाहा॥**
4. **ॐ मेधायै स्वाहा॥**	12. **ॐ लोकमातृकायै स्वाहा॥**
5. **ॐ सावित्र्यै स्वाहा॥**	13. **ॐ धृत्यै स्वाहा॥**
6. **ॐ विजयायै स्वाहा॥**	14. **ॐ पुष्ट्यै स्वाहा॥**
7. **ॐ जयायै स्वाहा॥**	15. **ॐ तुष्ट्यै स्वाहा॥**
8. **ॐ देवसेनायै स्वाहा॥**	16. **ॐ आत्मदेवतायै (कुलदेवतायै) स्वाहा**

सप्त घृत मातृका होम।

1. ॐ श्रीये स्वाहा॥	५॥ **ॐ स्वाहायै स्वाहा॥**
2. ॐ लक्ष्म्यै स्वाहा॥	६॥ **ॐ प्रज्ञायै स्वाहा॥**
3. ॐ धृत्यै स्वाहा॥	७॥ **ॐ सरस्वत्यै स्वाहा॥**
4. ॐ मेधायै स्वाहा॥	

- **सूर्य –** सूर्य (Sun): अर्क (मदार)

  ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्न मृतं मर्त्यञ्च।

  हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

  जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महदद्युति । तमोरिंसर्व पापघ्नं प्रणतोस्मि दिवाकर

  ॐ भूर्भुवः स्वः सूर्याय स्वाहा

- चंद्र (Moon): पलाश

ॐ इमं देवा असपत्न ꣳ सुवध्वं महते क्षत्राय महते जेष्ठ्याय महते । जानराज्याय इन्द्रस्येन्द्रियाय। इममुष्य पुत्र ममुष्यै पुत्रमस्यै विश एष वोऽमी, राजा सोमो ऽस्माकं ब्राह्मणाना ꣳ राजा॥

- दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव संभवं ।नमामि शशिनं सोमं शंभोर्मुकुट भूषण ।।

  भूर्भुवः स्वः सोमाय स्वाहा

- मंगल (Mars): खैर (खदिर)

  ॐ अग्निर्मूर्धा दिवः ककुत्पतिः पृथिव्या अयम्। अपा ꣳ रेता ꣳ सि जिन्वति॥

  धरणीगर्भ संभूतं विद्युत्कांतीं समप्रभ । कुमारं शक्तिहस्तं मंगलं प्रणमाम्यहं ।।

  ॐ भूर्भुवः स्वः भौमाय स्वाहा॥

- बुध (Mercury): अपामार्ग

  ॐ उद्बुध्य स्वाग्ने प्रति जागृहि त्वमिष्टा पूर्ते स ꣳ सृजेथामयं च।

  अस्मिन्त् सधस्थे अध्युत्त रस्मिन् विश्वेदेवा यजमानश्च सीदत॥

  प्रियंगुकलिका श्यामं रुपेणा प्रतिमं बुध ।सौम्यं सौम्य गुणपेतं तं बुधं प्रणमाम्यह ।।

  ॐ भूर्भुवः स्वः बुधाय स्वाहा

- गुरु (Jupiter): पीपल (अश्वत्थ)

  ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु।

  यद्दीदयच्छवस ऋृत प्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्।

  देवानांच ऋषीनांच गुरुंकांचन सन्निभ ।बुद्धिभूतं त्रिलोकेशं तं नमामि बृहस्पति ।।

  ॐ भूर्भुवः स्वः बृहस्पतये स्वाहा

- शुक्र (Venus): गूलर (औदुंबर)

  ॐ अन्नात्परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यपिबत्क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः।

ऋतेन सत्यमिन्द्रियं विपान ꣳ शुक्र मन्धस इन्द्रस्येन्द्रिय मिदं पयो ऽमृतं मधु ॥

हिमकुंद मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरु । सर्वशास्त्र प्रवक्तारं भार्गवं प्रणमाम्यह ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्राय स्वाहा

- शनि (Saturn): शमी

ॐ शंनो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये । शं योरभि श्रवन्तु नः ॥

नीलांजन समाभासं रविपुत्रं यमाग्रज ।छायामार्तंड संभूतं तं नमामि शनैश्चर ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः शनैश्चराय स्वाहा

- राहु (Rahu): दूब (दूर्वा घास)

ॐ कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधाः सखा । कया शचिष्ठया वृता ॥

अर्धकायं महावीर्यं चंद्रादित्य विमर्दन । सिंहिका गर्भसंभूतं तं राहुं प्रणमाम्यह ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः राहवे स्वाहा

- केतु (Ketu): कुशा (कुश घास)

ॐ केतुं कृण्वन्न केतवे पेशो मर्या अपेश से । समुषद्भिरजायथाः ॥

ॐ पलाश पुष्प सकाशं तारका ग्रह मस्तकम् । रौद्रं रौद्रात्मकं घोरं तं केतुं प्रणमाम्यहम् ।।

ॐ भूर्भुवः स्वः केतवे स्वाहा

अधि देवता हवन-

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् । उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥
एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलकपालखट्वाङ्गधरेण सार्धम् ।लोकेश यक्षेश्वर यज्ञसिद्धयै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ईश्वराय नमः स्वाहा ।

ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रुपमश्विनौ व्यात्तम् । इष्णान्निषाणामुं म इषाण सर्वलोकं म इषाण ।
हेमाद्रितनयां देवीं वरदां शङ्करप्रियाम् ।लम्बोदरस्य जननीमुमामावाहयाम्यहम् ॥ **उमाय नमः स्वाहा ।**

ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात् ।श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन् ॥
रुद्रतेजः समुत्पन्नं देवसेनाग्रगं विभुम् । षण्मुखं कृत्तिकासूनुं स्कन्दमावाहयाम्यहम् ॥**स्कन्दाय नमः स्वाहा ।**

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोः श्नप्त्रे स्थो विष्णोः स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥
देवदेवं जगन्नाथं भक्तानुग्रहकारकम् । चतुर्भुजं रमानाथं विष्णुमावाहयाम्यहम् ॥ **विष्णवे नमः स्वाहा ।**

ॐ आ ब्रह्मन्ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवास्य यजमानस्य वीरो जायतां निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥
कृष्णाजिनाम्बरधरं पद्मसंस्थं चतुर्मुखम् । वेदाधारं निरालम्बं विधिमावाहयाम्यहम् ॥ **ब्रह्मणे नमः स्वाहा ।**

ॐ सजोषा इन्द्र सगणो मरुद्भि: सोमं पिब वृत्रहा शूर विद्वान्। जहि शत्रूँररप मृधो नुदस्वाथाभयं कृणुहि विश्वतो न:
देवराजं गजारुढं शुनासीरं शतक्रतुम्। वज्रहस्तं महाबाहुमिन्द्रमावाहयाम्यहम्॥ **इन्द्राय नमः स्वाहा।**

ॐ यमाय त्वांऽगिरस्वते पितृमते स्वाहा। स्वाहा घर्माय स्वाहा घर्म: पित्रे॥
धर्मराजं महावीर्यं दक्षिणादिक्पतिं प्रभुम्। रक्तेक्षणं महाबाहुं यममावाहयाम्यहम्॥ **यमाय नमः स्वाहा।**

ॐ कार्षिरसि समुद्रस्य त्वा क्षित्या उन्नयामि। समापो अद्भिरग्मत समोषधीभिरोषधी:॥
अनाकारमनन्ताख्यं वर्तमानं दिने दिने। कलाकाष्ठादिरुपेण कालमावाहयाम्यहम्॥**कालाय नमः स्वाहा।**

ॐ चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय। धर्मराजसभासंस्थं कृताकृतविवेकिनम्।
आवाहये चित्रगुप्तं लेखनीपत्रहस्तकम्॥ **चित्रगुप्ताय नमः स्वाहा॥ अधि देवताभ्यो नमः स्वाहा॥**

अनेन होमेन ईश्वरादि अधि देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

प्रत्यधि देवता हवन-

ॐ त्वं न्नो अग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्नवश्च व्वन्द्य।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष गुंग रक्षमाणस्तवव्रते। **अग्नये नमः स्वाहा।**
ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश (ऽ)गुंग स मा न आयुः प्रमोषीः॥ **अद्भ्यो नमः स्वाहा।**

ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी। यच्छा नः शर्म सप्रथाः। **पृथिव्यै नमः स्वाहा।**

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णो: श्नप्त्रे स्थो विष्णो: स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोऽसि। वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥
विष्णवे नमः स्वाहा।

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र (ऽ)गुंग हवे हवे सुहव (ऽ)गुंग शूरमिन्द्रम् ह्वयामि शक्रं पुरुहूतमिन्द्र (ऽ)गुंग
स्वस्ति नो मघवा धात्विन्द्रः **।।** **इन्द्राय नमः स्वाहा।**
इन्द्राणि अहम् अस्मि वरुणानि अहम्, मित्रस्याहं चक्षुषा सं ददर्शि।
अहं राष्ट्रस्याभिभूत्या वरूत्री, इन्द्रेण संनद्धा परि वावृतेयम्॥ **इन्द्राण्यै नमः स्वाहा।**

अन्नात् परिस्रुतो रसं ब्रह्मणा व्यिबत् क्षत्रं पयः सोमं प्रजापतिः। ऋतेनं सत्यमिंन्द्रियं विपानं
शुक्रमन्धंसऽइन्द्रंस्येन्द्रियमिदं पयोऽमृतं मधुं॥ **प्रजापतये नमः स्वाहा।**
ॐ नमोस्तु सर्पेभ्यो ये के च प्रथिवी मनु। ये अंतिरिक्षे ये दिवि तेभ्यो : सर्पेभ्यो नमः।।
सर्पेभ्यः नमः स्वाहा।

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेनऽआवः॥

स बुधन्यास्उपमास्अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥ **ब्रह्मणेभ्यो नमः स्वाहा ॥**

प्रत्यधि देवताभ्यो नमः स्वाहा ॥ अनेन होमेन अग्न्यादि प्रत्यधि देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

पञ्च लोकपाल हवन-

ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम । आहमजानि गर्भधमात्वमजासि गर्भधम् **॥गणपतये नमः स्वाहा ।**

ॐ जातवेदसे सुनवाम सोम मरातीयतो निदहाति वेदः । सनः पर्षदति दुर्गाणि विश्वानावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः ॥ **दुर्गायै नमः स्वाहा ।**

ॐआ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर ँ सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् । वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः॥ **वायवे नमः स्वाहा ।**

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा । दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ **आकाशाय नमः स्वाहा ।**

उपयामगृहीतोऽस्यश्विभ्यां त्वैष ते योनिर्माध्वीभ्यां त्वा ॥
देवतानां च भैषज्ये सुकुमारो भिषग्वरौ । आवाहयाम्यहं देवावश्विनौ पुष्टिवर्द्धनौ ॥

अश्विभ्यां नमः स्वाहा ।

पञ्चलोकपाल देवताभ्यो नमः स्वाहा ॥ अनेन होमेन पञ्चलोकपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

दश दिग्पाल हवन-

ॐ त्रातारमिन्द्रमवितारमिन्द्र ँ हवे हवे सुहव ँ शूरमिन्द्रं आवाह्यामि । शक्रम्पुरुहूतमिन्द्र ँ स्वस्ति नो मघबा धात्विन्द्रः ॥

इन्द्रं सुरपतिश्रेष्ठं वज्रहस्तं महाबलम् । आवाहये यज्ञसिद्ध्यै शतयज्ञाधिपं प्रभुम् ॥ **इन्द्राय नमः स्वाहा ।**

ॐ त्वं न्नो अग्ने तव देव पायुभिर्म्मघोनो रक्ष तन्नवश्च व्वन्द्य ।
त्राता तोकस्य तनये गवामस्यनिमेष गुंग रक्षमाणस्तवव्रते।
त्रिपादं सप्तहस्तं च द्विमूर्धानं द्विनासिकम् ।
षण्नेत्रं च चतुःश्रोत्रमग्निमावाहयाम्यहम् ॥ **अग्नये नमः स्वाहा ।**

ॐ यमाय त्वाऽङ्गिरस्वते पितृमते स्वाहा । स्वाहा घर्माय स्वाहा धर्मः पित्रे ॥
महामहिषमारूढं दण्डहस्ते महाबलम् । यज्ञसंरक्षणार्थाय यममावहयाम्यहम् ॥ **यमाय नमः स्वाहा ।**

ॐ असुन्वन्तमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य ।
अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु॥
सर्वप्रेताधिपं देवं निर्ऋतिं नीलविग्रहम्। आवाहये यज्ञसिद्धयै नरारूढं वरप्रदम् ॥ **निर्ऋतये नमः स्वाहा ।**

ॐ तत्त्वा यामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदा शास्ते यजमानो हविर्भिः।
अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश (ऽ)गुंग स मा न आयुः प्रमोषीः ॥

शुद्धस्फटिकसंकाशं जलेशं यादसां पतिम् आवाहये प्रतीचीशं वरुणं सर्वकामदम् ॥ **वरुणाय नमः स्वाहा।**

ॐ आ नो नियुद्भिः शतिनीभिरध्वर (ऽ)गुंग सहस्त्रिणीभिरुप याहि यज्ञम् ।
वायो अस्मिन्त्सवने मादयस्व यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥

मनोजवं महातेजं सर्वतश्चारिणं शुभम् यज्ञसंरक्षणार्थाय वायुमावाहयाम्यहम् ॥ **वायवे नमः स्वाहा।**

ॐ घृतं घृतपावानः पिबत वसां वसापावानः पिबतान्त रिक्षस्य हविरसि स्वाहा ।

दिशः प्रदिश आदिशो विदिश उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा ॥ **आकाशाय नमः स्वाहा।**

ॐ तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम् ।
पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये ॥

सर्वाधिपं महादेवं भूतानां पतिमव्ययम् आवाहये तमीशानं लोकानामभयप्रदम् ॥ **ईशानाय नमः स्वाहा।**

ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन: आवः ॥

स बुधन्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च विवः ॥

पद्मयोनिं चतुर्मूर्तिं वेदगर्भं पितामहम् आवाहयामि ब्रह्माणं यज्ञसंसिद्धिहेतवे ॥ **ब्रह्मणे नमः स्वाहा।**

ॐ स्योना पृथिविनो भवानृक्षरा निवेशनी । यच्छा नः शर्म सप्रथाः ।
अनन्तं सर्वनागानामधिपं विश्वरूपिणम् जगतां शान्तिकर्तारं मण्डले स्थापयाम्यहम् ॥ **अनन्ताय नमः स्वाहा ॥**

दश दिकपाल देवताभ्यो नमः स्वाहा ॥

अनेन होमेन दशादिकपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत् ॥

ब्रह्मा ॥ ॐ ब्रह्म यज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः।
सबुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनि मसतश्च विवः॥ श्री ब्रह्मणे स्वाहा॥ ॥

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसारूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्॥

॥ विष्णु ॥ ॐ विष्णोरराटमसि विष्णोः श्नप्त्रेस्थो विष्णो स्यूरसि विष्णो ध्रुवोऽसि।
वैष्णवमसि विष्णवे त्वा॥ श्री विष्णवे स्वाहा॥

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥

॥ महेश ॥ ॐ नमः शंभवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च

नमः शिवाय च शिवतराय च। श्री रुद्राय स्वाहा॥

ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥

॥ क्षेत्रपाल देवता ॥

ॐ नहि स्पशमविदन्नन्यमस्माद्वैश्वानरात्पुर एतारमग्नेः ।
एमेनमवृधन्नमृता अमर्त्यं वैश्वानरं क्षैत्रजित्याय देवाः ॥

भूतप्रेतपिशाचाद्यैरावृतं शूलपाणिनम् । क्षेत्रपाल देवताभ्यो स्वाहा॥ इदं क्षेत्रपाल देवताभ्यो इदं न मम॥

अनेन होमेन क्षेत्रपाल देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

॥ वास्तु देवता ॥

ॐ वासतोष्पते प्रतिजानीह्यस्मान्त्स्वावेशो अनमीवो भवा नः ।

यत् त्वेमहे प्रति तन्नो जुषस्व शं नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे ॥**वास्तु पुरुषाय स्वाहा॥**

इदं वास्तोष्पतये इदं न मम॥

अनेन होमेन वास्तुपुरुष देवताः प्रीयन्तां न ममेति जलम् उत्सृजेत्॥

(प्रधान देवता के लिये वैदिक मन्त्र से अथवा बीज मन्त्र या १०८ नामों से आहुतियां दें॥)

पुरुष सूक्त हवन। श्री सूक्त हवन। बीज मंत्र हवन॥

॥ विविध गायत्री मन्त्र ॥

॥ गणेश ॥	ॐ एक दन्ताय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्॥
॥ शिव ॥	ॐ तत् पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्॥
॥ नारायण ॥	ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्॥
॥ लक्षमी ॥	ॐ महालक्ष्म्यै च विद्महे विष्णु प्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मिः प्रचोदयात्॥
॥ ब्रह्मा ॥	ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसरूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्॥
॥ सरस्वती ॥	ॐ सरस्वत्यै च विद्महे ब्रह्म पुत्र्यै च धीमहि तन्नः वणीः प्रचोदयात्॥
॥ राम ॥	ॐ दाशरथाय विद्महे सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्॥
॥ सीता ॥	ॐ जनकनन्दिन्यै विद्महे भूमिजायै च धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात्॥
॥ लक्ष्मण ॥	ॐ दाशरथाय विद्महे उर्मिला प्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मणः प्रचोदयात्॥

॥ हनुमान ॥	ॐ आञ्जनेयाय विद्महे महाबलाय धीमहि तन्नो हनुमत् प्रचोदयात् ॥
॥ कृष्ण ॥	ॐ देवकीनन्दनाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात् ॥
॥ राधा ॥	ॐ वृषभानुजाय विद्महे कृष्ण प्रियायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात् ॥
॥ तुलसी ॥	ॐ तुलस्यै च विद्महे विष्णु प्रियायै धीमहि तन्नो वृन्दा प्रचोदयात् ॥
॥ अग्नि ॥	ॐ महाज्वालाय विद्महे अग्निदेवाय धीमहि तन्नो ऽग्निः प्रचोदयात् ॥
॥ इन्द्र ॥	ॐ सहस्त्र नेत्राय विद्महे वज्रहस्ताय धीमहि तन्नः इन्द्रः प्रचोदयात् ॥
॥ यम ॥	ॐ सूर्यपुत्राय विद्महे महाकालाय धीमहि तन्नो यमः प्रचोदयात् ॥
॥ वरुण ॥	ॐ जलविम्बाय विद्महे नील पुरूषाय धीमहि तन्नो वरुणः प्रचोदयात् ॥
॥ पृथ्वी ॥	ॐ पृथ्वीदेव्यै च विद्महे सहस्त्र मूर्तयै धीमहि तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात् ॥
॥ गुरु ॥	ॐ गुरु देवाय विद्महे पर ब्रह्मणे च धीमहि तन्नो गुरुः प्रचोदयात् ॥
॥ ब्रह्म ॥	ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ॥
॥ हंस ॥	ॐ परमहंसाय विद्महे महाहंसाय धीमहि तन्नो हंसः प्रचोदयात् ॥
॥ गौरी ॥	ॐ गिरिजायै विद्महे शिव प्रियायै धीमहि तन्नो गौरीः प्रचोदयात् ॥
॥ दुर्गा ॥	ॐ कात्यायनाय विद्महे कन्याकुमारि धीमहि तन्नो दुर्गो प्रचोदयात् ॥

स्विष्ट कृत आहुति ॥

यह प्रायश्चित् आहुति भी कहलाती है । सुपारी मिष्ठान्न आदि को पान के पत्ते में रखकर यह आहुति करनी चाहिये ॥

ॐ यदस्य कर्मणो ऽत्यरीरिचं, यद्वान्यून मिहाकरम् ।
अग्निष्टत् स्विष्टकृद् विद्यात्सर्व, स्विष्टं सुहुतं करोतु मे ।
अग्नये स्विष्ट कृते सुहुतहुते, सर्व प्रायश्चित् आहुतिनां ।
कामानां समर्द्धयित्रे सर्वान्नः, कामान्त्समर्द्धय स्वाहा । इदं अग्नये स्विष्ट कृते इदं न मम ॥

॥ प्रायश्चित् आहुति ॥ नवाज्याहुतयः ॥

इन मन्त्रों से धी की आहुति दें - बचे हुवे धी को प्रोक्षणी पात्र में डालें ।

(1)	**ॐ भूः स्वाहा ।**	**इदं अग्नये इदं न मम ॥**
(2)	**ॐ भुवः स्वाहा ।**	**इदं वायवे इदं न मम ॥**

(3) ॐ स्वः स्वाहा। इदं सूर्याय इदं न मम ॥

(4) ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदं प्रजापतये इदं न मम ॥

(5) ॐ त्वन्नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अवियासि सीष्ठाः।
यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषा ꣳसि प्रमुमुग्ध्यस्मत् स्वाहा ॥ इदं अग्नि वरुणाभ्यां इदं न मम ॥

(6) ॐ सत्वन्नो अग्नेवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ।
अवयक्ष्वनो वरुणं रराणो वीहि मड़ीकं सुहवो न एधि स्वाहा ॥ इदं अग्नि वरुणाभ्यां इदं न मम ॥

(7) ॐ अयाश्चाग्नेस्यनभि शस्तिपाश्च सत्य मित्वमयासि।
अया नो यज्ञं वहास्य यानो धेहि भेषज ꣳ स्वाहा ॥ इदं अग्नये अयसे च इदं न मम ॥

(8) ॐ ये ते शतं वरुणये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा विताता महान्तः।
तेभिर्नो अद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा ॥
इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः च इदं न मम ॥

(9) ॐ उदुत्तमं वरुण पाश मस्मदवाधमं विमध्यमं श्रथाय।
अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा ॥ इदं वरुणायादित्यादितये च इदं न मम ॥

॥ पूर्णाहुती ॥

सुपारी अथवा नारियल पीला सूत और सामग्री लेकर खड़े हो कर पूर्णाहुति करें।

ॐ पूर्णमदः पुर्णमिदं पुर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवा वशिष्यते। स्वाहा ॥

निम्न मन्त्र से बची हुवी सामग्री को तीन भाग में कर के प्रत्येक भाग को अग्नि मे छोड़ें।

ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा। ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा। ॐ सर्वं वै पूर्ण ꣳ स्वाहा।

बचे हुवे धी को एक धार से हवन कुण्ड में छोड़ें ।

ॐ वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्र मसि सहस्त्रधारम्। देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः स्वाहा ॥ इदं वाजादिभ्यो, अग्नये, विष्णवे, रुद्राय, सोमाय, वैश्वान्नराय च, इदं न मम ॥ *निम्न मन्त्र से यजमानों के उपर जल छिड़कें।*

यथा बाण प्रहाराणां कवचं वारकं भवेत। तद्वत्दैवोप घातानां शान्तिर्भवतु वारिका ॥

प्रोक्षणी के जल से दोनो हाथों को मन्जन कर आँख चेहरे तथा पूरे शरीर पर लगायें।

1. *तेजोसि तेजो मयि धेहि । २॥ वीर्यमसि वीर्यम् मयि धेहि ।*

3. *बलमसि बलं मयि धेहि । ४॥ ओजोस्योजो मयि धेहि ।*

5. *मन्युरसि मन्युम मयि धेहि ।* **5.** *सहोसि सहो मयि धेहि ।* **–** *यजुर्वेद* १९ऋ९

॥ भस्म धारणं त्र्यायुष करणं च ॥

कुण्ड के ऐशान्य कोण (N. E) से स्रुवा के अग्रभाग से शिर कण्ठ बाहु एवं हृदय पर लगायें।

ॐ जमदग्नेः त्र्यायुषं।	**इति ललाटे॥**	**माथे पर लगायें।**
ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषं।	**इति ग्रीवायाम्॥**	**गले पर लगायें।**
ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं।	**इति दक्षिण बाहुमूले॥**	**दांये हाथ के मूल पर लगायें।**
ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषं।	**इति हृदये॥**	**हृदय पर लगायें।**

आरती॥

क्षमा याचना॥

अब हाथ में फूल लेकर आवाहन के लिये पुष्पांजलिदें।

❖ कर्पूर गौरं करुणा ऽवतारं संसार सारङ्ग भुजगेन्द्र हारं।
सदा बसन्तं हृद्यार ऽ विन्दे भवं भवानि सहितं नमामि॥

❖ त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्व मम देव-देव॥

❖ कायेन वाचा मनसेन्द्रि यैर्वा। बुद्ध्यात्मना वा प्रकृतेः स्वभावात्।
करोमि यद् यत् सकलं परस्मै। नारायणायेति समर्पयामि॥
सदा शिवायेति समर्पयामि॥ जगदम्बिकायेति समर्पयामि॥

❖ अन्यथा शरणं नास्ति, त्वमेव शरणं मम। तस्मात् कारूण्य भावेन, रक्ष मां परमेश्वर।

❖ यानि कानि च पापानि जनमान्तर कृतानि च। तानि तानि विनश्यन्ति प्रदक्षिणां पदे पदे॥

❖ पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पापसम्भवः। त्राहि मां पुण्री काक्ष सर्वपाप हरो भव॥

❖ नाना सुगंधि पुष्पाणि । यथा कालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिः मया दत्तः गृहाण परमेश्वर ।

ॐ पूर्णमदः पुर्णमिदं पुर्णात्पूर्ण मुदच्यते । पूर्णस्य पूर्ण मादाय पूर्ण मेवा वशिष्यते ॥

वैश्विक कल्याण की प्रार्थना

दुर्जनः सज्जनो भूयात् सज्जनः शान्तिमाप्नुयात्। शान्तो मुच्येत बन्धेभ्यो मुक्तश्चान्यान विमोच्यत्।।

स्वस्ति प्रजाभ्याः परिपालयन्ता न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः।
गोब्राह्मणेभ्यः शुभमस्तु नित्यं लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु।।

काले वर्षतु पर्जन्यः पृथिवी शस्यशालिनी। देशोऽयं क्षोभरहितो ब्राह्मणाः सन्तु निर्भयाः।।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः। सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्।।

सर्वस्तरतु दुर्गाणि सर्वो भद्राणि पश्यतु। सर्वः सद्बुद्धिवाप्नोतु सर्व सर्वत्र नन्दतु।।

स्वस्ति मात्रे उत पित्रे नो अस्तु स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः।
विश्वं सुभूतं सुविदत्रं नो अस्तु ज्योगेव दृशेम सूर्यम्।।

अपुत्राः पुत्रिणः सन्तु पुत्रिणः सन्तु पौत्रिणः। अधनाः सधनाः सन्तु जीवन्तु शरदां शतम्।।

॥ पञ्चामृत पान ॥

अकाल मृत्यु हरणं, सर्व व्याधि विनाशनम्। विष्णु पादोदकं पित्वा, पुनर्जन्म न विद्यते ॥

राम कहे सुख ऊपजे, कृष्ण कहे दुख जाय। महिमा महा प्रसाद की, पावहुं प्रीत लगाय ॥

विशेष जानकारी ॥

पञ्चदेव पूजन में गणपति देवी विष्णु सूर्य और शिव की पूजा की जाती है ॥ यहाँ इन देवी देवताओं के लिये विहित और निषिद्ध पत्र पुष्प आदि का उल्लेख किया जा रहा है ।

गणपति के लिये विहित पत्र पुष्प ॥

गणेश जी को तुलसी छोड़ कर सभी पत्र पुष्प प्रिय हैं । अतः सभी अनिषिद्ध पत्र पुष्प इन पर चढ़ाये जाते है । गणपति को दूर्बा अधिक प्रिय है । अतः इन्हें सफेद या हरी दूर्बा अवश्य चढ़ानी चाहिये । दूर्बा की फुन्गी में तीन या पाँच पत्ते होनी चाहिये ।

गणपति पर तुलसी कभी न चढ़ाये ।

पद्म पुराण आचार रत्न में लिखा है कि - **न तुलस्या गणाधिपम् -** अर्थात तुलसी से

गणेश जी की पूजा कभी न की जाय। कार्तिक माहात्म्य में भी कहा है कि - **गणेशं तुलसी पत्रै दुर्गा नैव तु दूर्बया** - अर्थात गणेश जी की तुलसी पत्र से और दुर्गा की दूर्बा से पूजा न करें। गणेश को नैवेद्य में लड्डू अधिक प्रिये है।

देवी के लिये विहित पत्र पुष्प॥

भगवान शंकर की पूजा में जो पत्र पुष्प विहित हैं वे सभी भगवती गौरी - देवी को भी प्रिय है। शंकर पर चढ़ाने के लिये जिन फूलों का निषेध है तथा जिन फूलों का नाम नहीं लिया गया है वे भी भगवती पर चढ़ाये जाते हैं।

आक और मदार की तरह दूर्वा तिलक मालती तुलसी भंगरैया ौर तमाल विहित प्रतिषिद्ध हैं अर्थात ये शास्त्रों से विहित भी हैं और निषिद्ध भी हैं। विहित प्रतिषिद्ध के सम्बन्ध में तत्तव सागर संहिता का कथन है कि जब शास्त्रों से विहित फूल न मिल पाये तो ऐविहित प्रतिषिद्ध फूलों से पूजा कर लेनी चाहिये।

शिव पूजन के लिये विहित पत्र पुष्प॥

भगवान शंकर पर फूल चढ़ाने का बहुत अधिक महत्व है। बतलाया जाता है कि तप शील सर्व गुण सम्पन्न वेद में निष्णात किसी ब्राह्मण को सौ सुवर्ण दान करने पर जो फल प्रप्त होता है वह भगवान शंकर पर सौ फूल चढ़ा देने से प्राप्त हो जाता है। कौन कौन पत्र पुष्प शिव के लिये विहित हैं और कौन कौन निषिद्ध हैं इन की जान कारी अपेक्षित है। अतः उन का उललेख यहाँ किया जाता है।

पहली बात यह है कि भगवान विष्णु के लिये जो जो पत्र पुष्प विहित हैं वे सब भगवान शंकर पर भी चढ़ाये जाते हैं केवल **केतकी - केवड़े** का निषेद्ध है।

विष्णु पूजन के लिये विहित पत्र पुष्प॥

भगवान विष्णु को तुलसी पत्र बहुत ही प्रिय है। एक ओर रत्न मणि तथा स्वर्ण निर्मित बहुत दे फूल च ढाये जायँ ौर दूसरी ओर तुलसी दल चढ़ाया जाय तो भगवान तुलसी दल को ही पसंद करेंगे। सच पूछा जाय तो ये तुलसी दल की सोलहवीं कला की भी समता नहीं कर सकते। भगवान विष्णु को कौस्तुभ भी

उतना प्रिय नहीं है जितना कि तुलसी दल मंजरी। काली तुलसी तो प्रिय है ही किंतु गौरी तुलसी तो और भी अधिक य है॥

तुलसी से पूजित शिव लिंग या विष्णु की प्रतिमा के दर्शण मात्र से ब्रह्म हत्या भी दूर हो जाती है। एक ओर मालती आदि की ताजी मालायें हों और दूसरी ओर बासी तुलसी हो तो भगवान बासी तुलसी को ही अपनायेंगे॥

विष्णु भगवान पर नीचे लिखे फूलो को चढ़ाना मना है -

आक; धतूरा; कांची; भटकटैया; चिचिड़ा; कैथ; सहिजन; कचनार; बरगद; गूलर; पाकर; पीपर और अमड़ा॥

वस्त्र - पीला। फूल - पीला। पत्र - तुलसी॥

सूर्य अर्चन के लिये विहित पत्र पुष्प॥

गुंजा (कृष्णला) धतूरा कांची अपराजिता भटकटैया तगर और अमड़ा - इन्हें सूर्य पर न चढ़ाये। वीरमित्रोदय ने इन्हें सूर्य पर चढ़ाने का स्पष्ट निषेध किया है। यथा सभी फूलों का नाम गिनाना कठिन है। सब फूल सब जगह मिलते भी नहीं। अतः शास्त्र योग्य फूलों के चुनाव के लिये हमें एक कसौटी दी है कि जो फूल निषेध कोटि में नहीं हैं और रंग रूप तथा सुगंध से युक्त हैं उन सभी फूलों को भगवान को चढ़ाना चाहिये।

येषां न प्रतिषेधोऽस्ति गन्ध वर्णान्वितानि च। तानि पुष्पाणि देयानि भानवे लोक भानवे॥

वस्त्र - लाल। फूल - लाल।